

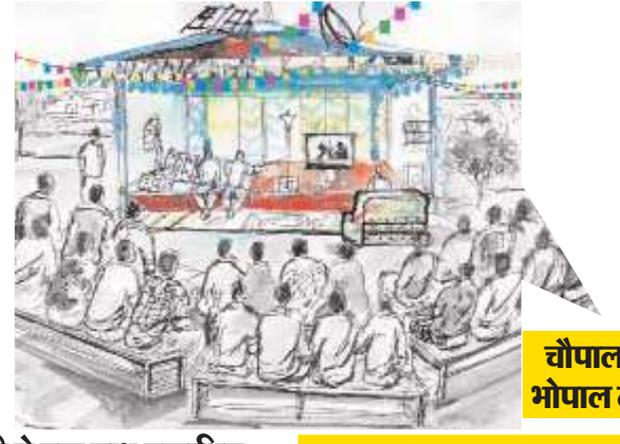
जागत



पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

# गांव

हमारा



वौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 06-12 मई 2024 वर्ष-10, अंक-3

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ:-8, मूल्य:- 2 रुपए

## किसान होंगे आत्मनिर्भर और खेती बनेगी लाभ का धंधा...सटीक एग्रीकल्चर डेटा के साथ किसानों को मिलेगा लाभ प्रदेश में भी फसल सर्वे में एआई और मशीन लर्निंग का होगा इस्तेमाल!

भोपाल। जागत गांव हमारा

मध्य प्रदेश के साथ देश के एग्रीकल्चर स्टेटिक्स सिस्टम को मजबूत और बेहतर करने के लिए फसलों के सर्वे में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग जैसी मॉडर्न एनालिटिक्स और तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। इसको लेकर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तैयारियों में जुटा है। देश में सभी सीजन में फसलों के सटीक आकलन के लिए सर्वे प्रक्रिया को आज के हिसाब से मॉडर्न करने की योजना है। जिससे फसल उत्पादन अनुमानों को और

पक्का किया जा सके और एग्रीकल्चर डेटा का समय पर सटीक कलेक्शन हो सके। रिपोर्ट के अनुसार भारत सटीक रकबे का आकलन करने के लिए देश भर में मॉडर्न एनालिटिक और एआई की मदद से नियमित डिजिटल फसल सर्वेक्षण करके अपनी कृषि सांख्यिकी प्रणाली को मजबूत करने की योजना बना रहा है। इस कदम से सरकार को अधिक सटीक कृषि उत्पादन पूर्वानुमान लगाने में मदद मिलने की उम्मीद है, जिससे वह समय पर उचित व्यापार नीति उपाय शुरू करने में सक्षम होगी।

### पायलट प्रोजेक्ट: 12 राज्यों में किया गया सर्वे

केंद्र सरकार ने पिछले साल पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 12 राज्यों में डिजिटल फसल सर्वेक्षण शुरू किया था। शुरुआती नतीजे उत्साहजनक पाए गए। यह डिजिटल सर्वेक्षण का पायलट प्रोजेक्ट राज्य मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ओडिशा, असम और गुजरात में किया गया। अब इस पहल को बढ़ाना और पूरे देश को कवर करने से पहले इसे बड़ी संख्या में राज्यों तक ले जाना है।

कई वजहों से हो रहा अपरोडेशन | रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर सब कुछ ठीक रहा तो डिजिटल सर्वेक्षण अगली गर्मियों से बड़े पैमाने पर शुरू किया जा सकता है। अधिकारी आमतौर पर फसल बोवनी के आंकड़ों के लिए स्थानीय अधिकारियों के इनपुट और क्षेत्र सर्वेक्षण पर निर्भर रहते हैं, जो कई बार अविश्वसनीय साबित हुए हैं। इसके अलावा एग्रीकल्चर डेटा का समय पर कलेक्शन भी जरूरी है।

हमारा उद्देश्य खरीफ सीजन के दौरान फसल प्रदर्शन का आकलन और समीक्षा करना, आवश्यक इनपुट की आपूर्ति सुनिश्चित करना, फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयोगी लेटेस्ट टेक्नोलॉजी को अपनाने में सहायता समेत अन्य सुविधायें उपलब्ध कराना है। मप्र में भी अब कृषि में नई तकनीक का इस्तेमाल होगा।

फेज अहमद किदवई,  
अतिरिक्त सचिव, कृषि विभाग

पौधारोपण पर डेढ़ हजार करोड़ और रखरखाव पर 90 करोड़ रुपए किए गए खर्च

छह साल में मप्र में रोपे गए 25 करोड़ पौधे, फिर भी घट रही हरियाली

## वीरान जंगल



### कब-कितना पौधारोपण

2017-18	58839400
2018-19	54371563
2019-20	33429268
2020-21	38600000
2021-22	30277626
2022-23	47903207

### वर्षवार पौधों की संख्या

2013-14	878.79 लाख
2014-15	866.87 लाख
2015-16	640.00 लाख
2016-17	810.00 लाख
2017-18	825.00 लाख

एक साल में 350 करोड़ खर्च प्रदेश में हर साल पौधों की खरीद और रखरखाव पर हर साल करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। 2021-22 में अकेले पौधारोपण पर 350.96 करोड़ खर्च हुए। वहीं, इनके संरक्षण पर 17.98 करोड़ खर्च किए गए। इसी तरह 2020-21 में पौधारोपण पर 348 करोड़ और संरक्षण पर 20.92 करोड़ रुपए खर्च हुए थे।

भोपाल। जागत गांव हमारा

मध्य प्रदेश में हर साल लाखों पौधे लगाए जाने का दावा किया जाता है। लेकिन पिछले 12 साल में कम से कम 207 वर्ग किमी जंगल घट गया है। बीते पांच साल में प्रदेश के जंगल में 25 करोड़ से ज्यादा पौधारोपण हुआ। इसके बाद भी हरियाली गायब है। प्रदेश के जंगल में हरियाली बढ़ाने पौधारोपण किया जाता है। 2022-23 में प्रदेश के जंगल में 4 करोड़ 79 लाख 3 हजार 207 पौधे लगाए गए थे। बीते चार साल में पौधारोपण पर 1510 करोड़ रुपए और रखरखाव पर 90 करोड़ रुपए खर्च किए गए। इतनी बड़ी रकम खर्च होने के बाद भी न तो हरियाली बढ़ी और न ही अवैध कटाई रुकी। 1980 से 2021-22 तक 119401 हेक्टेयर वन भूमि को दूसरे कामों के लिए इस्तेमाल किया गया है। वहीं, पिछले चार साल में अवैध खनन से 10974 हेक्टेयर

जंगल प्रभावित हुआ है। लगातार गांव व शहर तक हो रहे निर्माण की वजह से भी जंगल घट रहा। इससे अब पर्यावरण संतुलन भी बिगड़ने लगा है। स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक 2009-10 में राज्य में अति सघन, सघन और खुला वनक्षेत्र 77,700 वर्ग किमी था। मप्र वन विभाग के वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन वर्ष 2021-22 के आंकड़ों को देखें तो पता चलता है कि शहरी क्षेत्रों से सटे जंगलों में ज्यादा अतिक्रमण हो रहा है। आदिवासी क्षेत्र बैतूल और भोपाल से सटे जंगल में हुए अतिक्रमण के आंकड़ों से यह साफ पता चलता है। 2018 से नवंबर 2021 तक उपलब्ध आंकड़े यही बताते हैं। 2018 से नवंबर 2021 तक आदिवासी बाहुल्य जिले बैतूल से सटे महज 55 हेक्टेयर जंगल में अतिक्रमण हुआ। वहीं भोपाल से लगे 476 हेक्टेयर वनक्षेत्र में अतिक्रमण हो गया।

### 207 वर्ग किमी जंगल घटा

देखा जाए तो 12 साल में 207 वर्ग किमी जंगल घट गया। ऐसा तब है, जब हर साल पौधारोपण होने का दावा किया जाता है। आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2009 में 7 लाख 47 हजार, वर्ष 2010 में 6 लाख 60 हजार और वर्ष 2011 में 7 लाख 4 हजार पौधे रोपे गए। साल 2020-21 में वन विभाग ने 3 करोड़ 86 लाख से ज्यादा और साल 2021-22 में 3 करोड़ 2 लाख से ज्यादा पौधे लगाए।

### ओवन फॉरेस्ट का दायरा बढ़ा

वर्ष 2019-20 में मध्यम घना जंगल 34341 वर्ग किमी था, जो वर्ष 2021-22 में घटकर 34209 वर्ग किमी रह गया। यही नहीं, बहुत घने जंगल का रकबा भी दो किमी घटा ही है। 2019-20 में ये आंकड़ा 6667 वर्ग किमी था, जो वर्ष 2021-22 में घटकर 6665 वर्ग किमी पर आ गया। 2019 में ओपन फॉरेस्ट का दायरा 36465 था, जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 36618 हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक ओपन फॉरेस्ट का दायरा 153 वर्ग किमी तक बढ़ गया है।

## समर्थन मूल्य पर 20 मई तक गेहूं खरीदेगी सरकार

-खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग ने जारी किए आदेश -पहले 15 तक होनी थी समर्थन मूल्य पर खरीदी

भोपाल। प्रदेश के किसानों को सीएम डॉ. मोहन यादव ने बड़ी सौगात दी है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी की अंतिम तिथि बढ़ा दी गई है। अब 20 मई 2024 तक प्रदेश में किसानों से गेहूं उपार्जन किया जाएगा। इसका आदेश भी जारी कर दिया गया है। पहले इंदौर, उज्जैन, भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग में 7 मई और जबलपुर, रीवा, शहडोल, सागर, ग्वालियर एवं चंबल संभाग में 15 तक होना था। लेकिन समय पर कटाई न होने की वजह से कई किसान गेहूं लेकर नहीं पहुंच पा रहे थे। किसानों की परेशानी को देखते हुए सरकार ने तारीख बढ़ाने का फैसला किया है। अब 20 मई तक किसानों से गेहूं उपार्जन किया जाएगा, गेहूं खरीदी खाद्य विभाग ने इसके आदेश जारी कर दिए हैं।



रबी विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन कार्य के लिए भोपाल संभाग में 7 मई नियत की गई थी, नवीन जारी आदेश के अनुसार कृषकों की सुविधा को दृष्टिगत प्रदेश में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन की अवधि 20 मई तक बढ़ाई गई है। गेहूं उपार्जन का कार्य 20 मई तक जारी रहेगा।

मीना मालाकार, जिला आपूर्ति अधिकारी, भोपाल

### कलेक्टर हरजिंदर सिंह ने कमी देख लिया बड़ा फैसला, पड़ोसी राज्यों में किल्लत बरकरार

## मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में चारा-भूसा के निर्यात पर प्रतिबंध

भोपाल। जागत गांव हमारा

देश में सूखे चारे का संकट बढ़ रहा है। इसका असर यह पड़ रहा है कि अब एक जिले से दूसरे जिले में भी गेहूं का भूसा ले जाने पर रोक लग रही है। ताजा मामला मध्य प्रदेश से आया है। लेकिन ऐसे मामले महाराष्ट्र और हरियाणा में भी हो चुके हैं। मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में चारा-भूसा की आपूर्ति बनाए रखने व कानून-व्यवस्था को देखते हुए कलेक्टर हरजिंदर सिंह ने



दंड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी कर दिए हैं। जिसके तहत तत्काल प्रभाव से आगामी आदेश तक पशु चारे को जिले के बाहर निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया है। अब किसी भी व्यक्ति या संस्थान द्वारा पशु चारा (आहार), घास, भूसा, कड़वी इत्यादि पन्ना जिले के बाहर नहीं ले जाया जा सकता है। आदेश के अनुसार, उद्योगों एवं फैक्ट्रियों के वायुलरो व ईट-भट्टों इत्यादि में

भी पशु चारा-भूसा का ईंधन के रूप में उपयोग करना और भूसा व चारे का तर्कसंगत मूल्य से अधिक दाम पर किसी भी व्यक्ति द्वारा क्रय-विक्रय करने पर रोक रहेगी। चारा-भूसा का बनावटी संकट पैदा करने के लिए अनावश्यक रूप से उसका भंडारण करना भी प्रतिबंधित रहेगा। इसके अतिरिक्त केवल लायसेंसधारी उद्योग ही ईंधन उपयोगी भूसे का स्टॉक कर सकेंगे। सुरक्षा की समस्त जवाबदारी लायसेंसधारी की रहेगी, लेकिन प्रतिबंधित अवधि में जिले के बाहर लेकर जाने पर रोक रहेगी। आदेश की अवहेलना करने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

### महाराष्ट्र में भी चारे की कमी

महाराष्ट्र में भी सूखे जैसी स्थिति के कारण चारे की कमी हुई है और अब पशुपालकों को चारा खरीदने के लिए इधर-उधर भागना पड़ रहा है। उसमें चारे की कीमतें आसमान छू रही हैं। इस बीच फरवरी में अकोला जिले में चारे की कमी को देखते हुए प्रशासन द्वारा एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया था। जिले में उत्पादित चारा, मुर्गा फीड एवं टोटल मिक्स राशन को दूसरे जिलों में ले जाने पर रोक लगा दी गई थी। ताकि आने वाले समय में जिले में चारे का संकट और बड़ा न हो।



मूंग की खेती कर मालामाल हो रहे किसान

## हरदा में ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल को हरित क्रांति की तरह देखा जा रहा

पीएम नरेंद्र मोदी ने माना-तबा बांध के कारण मूंग की फसल से किसानों की आर्थिक स्थिति सुधरी, वर्ष 2023-24 में बोवनी का रकबा एक लाख 45 हजार हेक्टेयर

भोपाल। जागत गांव हमार

अब मग्न के किसानों ने बदलते परिवेश के साथ बदलना सीख लिया है। इससे लाभ भी अच्छा मिलने लगा है। इसी क्रम में मूंग की खेती कर किसान खुशहाल तो हैं साथ ही मालामाल भी हो रहे हैं। सिंचाई के संसाधनों वाले किसान खरीफ की फसल धान के बाद रबी की फसल चना, मसूर, मटर, तीसी सरसों आदि के बाद मूंग की खेती कर रहे हैं। बगैर खाद के पानी के सहारे एक वर्ष में तीसरी फसल भी तैयार हो जा रही है और धान की रोपाई के समय तक तैयार खेत खाली हो जाता है। इससे दालहनी फसल का अच्छा मुनाफा मिलता है। हरदा जिले में ग्रीष्मकालीन मूंग फसल को एक हरित क्रांति की तरह देखा जा रहा है। पिछले चार साल में मूंग फसल की पैदावार लेकर जिले के किसान समृद्ध हुए हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा योगदान तबा बांध है।

हरदा जिले में पिछले चार सालों में समर्थन मूल्य व जिले की हरदा,

खिरकिया, टिमरनी व सिराली मंडियों में करीब पांच हजार करोड़ की मूंग उपज बिकी है। वर्ष 2020-21 में एक लाख 25 हजार 500 हेक्टेयर में मूंग की बोवनी की गई थी। इस वर्ष 2023-24 में बोवनी का रकबा एक लाख 45 हजार हेक्टेयर है। जब से मूंग की बोवनी शुरू हुई है, किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इससे किसानों के जीवन स्तर में सुधार हो रहा है। इसके साथ ही अब मूंग की एंटी राजनीति में भी हो चुकी है। अब इसकी हर जगह तारीफ भी हो रही है। हरदा में जन आशीर्वाद रैली को संबोधित करने आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद हरदा, नर्मदापुरम और बैतूल में की जाने वाली मूंग की खेती की तारीफ कर चुके हैं। उन्होंने संबोधन में कहा था कि मूंग फसल से किसानों की आर्थिक स्थिति सुधरी है। नर्मदापुरम व हरदा में चारों ओर मूंग ही मूंग फसल दिखाई देती है। उन्होंने इसका श्रेय तबा बांध को भी दिया था।

### हर साल बढ़ रहा रकबा

मग्न में साल दर साल मूंग बोवनी का रकबा बढ़ रहा है। उपसंचालक कृषि हरदा संजय यादव का कहना है कि हरदा जिले में भी मूंग बोवनी का रकबा बढ़ा है। मूंग की बोवनी के बाद किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इस वर्ष एक लाख 45 हजार हेक्टेयर रकबे में मूंग की बोवनी प्रस्तावित है। वर्ष 2020-21 में एक लाख 25 हजार हेक्टेयर में मूंग की बोवनी हुई। जिले की सोसाइतियों में 196 हजार रुपये प्रति क्विंटल के समर्थन मूल्य पर 68 हजार 209 मीट्रिक टन मूंग की बिक्री हुई। करीब 491 करोड़ की मूंग बिकी। वर्ष 2021-22 में इस साल रकबा बढ़कर 1 लाख 36 हजार 800 हेक्टेयर हो गया। सोसाइतियों में 88 हजार 961 मीट्रिक टन की बिक्री हुई। करीब 647 करोड़ की मूंग बिकी। वर्ष 2022-23 में फिर रकबा बढ़, जो 1 लाख 43 हजार 890 हेक्टेयर रहा। सोसाइतियों में 84 हजार 646 मीट्रिक टन बिक्री हुई। करीब 65 करोड़ 64 लाख की मूंग बिकी। वर्ष 2023-24 में एक लाख 45 हजार हेक्टेयर रकबे में मूंग की बोवनी प्रस्तावित है। डोमरी के किसान प्रवीण सारन का कहना है कि पिछले चार साल से मैं पंद्रह एकड़ में मूंग की बोवनी कर रहा हूं। मेरी आर्थिक स्थिति सुधरी है। रबी और ग्रीष्मकालीन फसलों का उत्पादन मिलने से किसानों का विकास भी हुआ है।

### हर साल बढ़ रहे दाम

आदर्श कृषि उपज मंडी समिति हरदा के सचिव मोहन सिंह चौहान का कहना है कि जिले की चारों प्रमुख मंडियां हरदा, टिमरनी, खिरकिया और सिराली में पिछले चार साल में तीन हजार पांच सौ करोड़ से अधिक की मूंग उपज बिक्री हुई है। मंडियों में हर साल आवक बढ़ने के साथ मूंग के भावों में भी बढ़ोतरी हुई है। जिले की मंडियों में वर्ष 2020-21 में मूंग का माडल भाव 6650 रुपए प्रति क्विंटल, आवक एक लाख 94 हजार मीट्रिक टन, बिक्री राशि 728 करोड़ की हुई। वर्ष 2021-22 में माडल भाव 6666 रुपए प्रति क्विंटल, आवक एक लाख 39 हजार मीट्रिक टन, बिक्री राशि 925 करोड़ की हुई। वर्ष 2022-23 में माडल भाव 6750 रुपए प्रति क्विंटल, आवक एक लाख 32 हजार मीट्रिक टन, बिक्री राशि 874 करोड़ की हुई। वर्ष 2023-24 में माडल भाव 7900 रुपए प्रति क्विंटल, आवक एक लाख 29 हजार मीट्रिक टन, बिक्री राशि 1 हजार 5 करोड़। अब माना जा रहा है कि किसानों की लगन और मेहनत से यह आंकड़ा बढ़ता ही जाएगा।

## एफसीआई ने केंद्र का 20 हजार करोड़ सब्सिडी खर्च बचाया

भोपाल। जागत गांव हमार

भारतीय खाद्य निगम ने खुले बाजार में गेहूं की रिकॉर्ड बिक्री से जबरदस्त मुनाफा हासिल कर सरकार का फूड सब्सिडी खर्च 20 हजार करोड़ रुपए कम किया है। जबकि, केंद्र ने जरूरी सब्सिडी खर्च से कम एफसीआई को दिया था। लेकिन, एफसीआई ने वित्त वर्ष 2023-24 में ओपेन मार्केट में 10 मिलियन टन गेहूं की रिकॉर्ड बिक्री की। इससे हासिल मुनाफे से एफसीआई को अपना खर्च पूरा करने में मदद मिली और केंद्र की रकम बच गई। रिपोर्ट के अनुसार केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2023-24 में 2.12 ट्रिलियन रुपए (2.12 लाख करोड़) की कुल खाद्य सब्सिडी में से 1.4 ट्रिलियन रुपए (1.40 लाख करोड़) एफसीआई को भेजे गए थे। यर रकम एफसीआई के एक्जुअल खर्च 1.6 ट्रिलियन

रुपए, (1.60 लाख करोड़) से कम था। ऐसे में खुले बाजार में गेहूं बिक्री से जबरदस्त मुनाफा हासिल करने के चलते यह रकम पूरी हो सकी। एफसीआई ने खुले बाजार में गेहूं की नीलामी से 111 रुपए प्रति क्विंटल का मुनाफा हासिल किया है और एफसीआई ने ओपेन मार्केट में 10 मिलियन टन 1 करोड़ टन गेहूं की बिक्री की है।

**ब्याज भुगतान का 372 करोड़ भी बचा-** वित्त मंत्रालय की ओर से सब्सिडी खर्च की रकम जल्दी भुगतान से एफसीआई को ब्याज भुगतान के लगभग

372 करोड़ रुपए बचाने में मदद मिली है। क्योंकि, पहले के वर्षों में फंड जारी होने में देरी होती थी और एफसीआई को शॉर्ट टर्म लोन पड़ता था। आटा और गेहूं की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए एफसीआई ने पिछले वित्तीय वर्ष में मिलों और अन्य थोक खरीदारों को वीकली ई-नीलामी से 2023-2024 मार्केटिंग सीजन के लिए एमएसपी 2125 रुपए प्रति क्विंटल के मुकाबले 2236 रुपए प्रति क्विंटल कीमत पर गेहूं बेचा था। इस तरह से एफसीआई ने प्रति क्विंटल करीब 111 रुपए मुनाफा हासिल किया।



## नैनो यूरिया पर चल रहे विवाद के बीच केंद्र सरकार ने प्रदान की मंजूरी अब नैनो जिंक लिक्विड कॉपर लिक्विड भी बनेगा

भोपाल। जागत गांव हमार

नैनो यूरिया की प्रभावशीलता को लेकर चल रहे विवाद के बीच केंद्र सरकार ने इफको को नैनो जिंक लिक्विड और नैनो कॉपर लिक्विड बनाने के लिए भी मंजूरी दे दी है। केंद्र ने इसकी मंजूरी फर्टिलाइजर कंट्रोल ऑर्डर 1985 के तहत तीन साल के लिए दी है। इसका नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। पौधों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए फसल पोषण पर दो और नैनो टेक्नोलॉजी आधारित नए प्रोडक्ट जल्द ही बाजार में आ जाएंगे। हालांकि, इफको ने अभी यह नहीं बताया है कि नैनो जिंक और नैनो कॉपर की बोतल कितनी बड़ी होगी, इसका दाम क्या होगा, किस प्लांट में इसे बनाया जाएगा और किसानों तक यह कब तक पहुंच जाएगा। इफको इससे पहले नैनो यूरिया, नैनो यूरिया प्लस और नैनो डीएपी बना चुका है। अब सूक्ष्म पोषक तत्वों को लिक्विड

### जिंक और कॉपर महत्वपूर्ण

जिंक पौधों में काम करने वाले एंजाइम के लिए महत्वपूर्ण सूक्ष्म पोषक तत्व होता है। यह पौधों की वृद्धि और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पौधों में जिंक की कमी विश्व स्तर पर प्रमुख चिंताओं में से एक है। इसी प्रकार पौधों में कई एंजाइमी गतिविधियों और क्लोरोफिल और बीज उत्पादन के लिए कॉपर की आवश्यकता होती है। कॉपर की कमी से बीमारियों की आशंका बढ़ सकती है।

के रूप में उतारा जा रहा है। नैनो यूरिया लिक्विड पर देश के अंदर और बाहर दोनों तरफ से वैज्ञानिकों ने सवाल उठाए हैं। लेकिन उससे बेपरवाह इफको ने दो और प्रोडक्ट की मंजूरी हासिल कर ली है। दिसंबर 2022 में ही रसायन और उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने संसद में कह दिया था कि आने वाले दिनों में नैनो जिंक भी आएगा, नैनो सल्फर भी आएगा और भारत के फर्टिलाइजर सेक्टर में यह बहुत बड़ी क्रांति होगी।



### एमडी ने किया बड़ा दावा

इफको के एमडी डॉ. यूएस अवस्थी ने कहा है कि नैनो टेक्नोलॉजी आधारित इनोवेशन कृषि क्षेत्र पर छाप छोड़ रहे हैं। सहकारी कंपनी इफको के नए इनोवेशन इफको नैनो जिंक ( लिक्विड) और इफको नैनो कॉपर ( लिक्विड) को भारत सरकार ने नोटिफाई कर दिया है। तीन साल की अवधि के लिए दोनों उत्पादों के लिए फर्टिलाइजर कंट्रोल ऑर्डर की मंजूरी दे दी गई है। जिंक और कॉपर की कमी से पौधों में बीमारियों की आशंका बढ़ सकती है। ये नए नैनो फॉर्मूलेशन फसलों में जिंक और कॉपर की कमी को दूर करने, फसल की उपज और गुणवत्ता बढ़ाने और कुपोषण की समस्या का समाधान करने में मदद करेंगे। यह रिसर्च टीम के लिए एक और बड़ी उपलब्धि है, जिससे दुनिया भर के किसानों को काफी मदद मिलेगी।

### राशन स्कीम के लिए एफसीआई देता है खाद्यान्न

एफसीआई सरकारी योजनाओं की आपूर्ति के लिए खाद्यान्न खरीद और वितरण के लिए नोडल एजेंसी है। एफसीआई मुफ्त राशन योजना के लिए खाद्यान्न आपूर्ति के लिए जिम्मेदार है। पीएमजीकेएवाई मुफ्त राशन योजना के लिए एफसीआई 186 लाख टन गेहूं की आपूर्ति सालाना करता है। एफसीआई के लिए गेहूं की लागत दो साल पहले 24.67 रुपए प्रति किलोग्राम से बढ़कर 2023-24 में 27.09 रुपए प्रति किलोग्राम हो गई है।

कृषि वैज्ञानिकों का दावा-नई प्रजाति उत्पादन देने में भी अक्वल, गीतांजलि नाम की किस्म का उपयोग गेहूं की तरह कर सकते हैं

# किसानों को मालामाल बना रही छिलका रहित जौ

भोपाल। जागत गांव हमार

जौ की खेती देश के भीतर प्राचीन काल से होती आ रही है। यह एक देसी अनाज है जिसका इस्तेमाल गेहूं के आने के पहले सबसे ज्यादा होता रहा है। गेहूं प्रमुख खाद्यान्न के रूप में उगाया जाने लगा तो जौ का उपयोग पशुओं के चारे और पोषण के लिए किया जाने लगा। जौ एक ऐसी फसल होती है जिसमें कम सिंचाई के साथ-साथ उर्वरक की मात्रा भी कम लगती है। जौ की खेती प्रमुख रूप से रबी के सीजन में होती है। गेहूं की तुलना में जौ की खेती में समय के साथ-साथ फसल लागत भी कम आती है। हालांकि गेहूं के मुकाबले जौ के उपयोग के फायदे ज्यादा हैं। इसमें फाइबर की मात्रा काफी ज्यादा होती है। गेहूं और चावल के उपयोग से जहां शरीर में ग्लूकोज और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ती है। जौ के उपयोग से शरीर को कई सारे फायदे भी होते हैं। अभी तक जौ का उपयोग सीधे खाद्यान्न के रूप में नहीं हो पता है क्योंकि इसके ऊपर एक छिलका होता है जिसे हटाने के लिए काफी मेहनत करनी होती है। वहीं जौ की एक ऐसी किस्म भी अब विकसित हो चुकी है जो बिना छिलके वाली है। गीतांजलि नाम की इस किस्म का उपयोग गेहूं की तरह सीधे तौर पर किया जा सकता है।



## खेती से किसान की बढ़ेगी आय

गेहूं के मुकाबले जौ का उत्पादन कम है। वहीं उपभोग भी काफी कम हैं। गेहूं को सीधे प्रयोग में लिया जा सकता है जबकि जौ से आटा बनाने के लिए काफी मशकत करनी होती है। वहीं जौ

की एक उन्नत किस्म का विकास हुआ है जो छिलका रहित है। गीतांजलि नाम से यह किस्म किसानों के बीच काफी ज्यादा चर्चित हो रही है। इस जौ की किस्म का उत्पादन 60 क्विंटल प्रति

हेक्टेयर तक होता है। वहीं इस किस्म में पोषक तत्व की मात्रा भी भरपूर पाई जाती है। अगर किसान इस प्रजाति के जौ की खेती करते हैं तो उन्हें गेहूं के मुकाबले ज्यादा फायदा मिलता है।

## जौ की उन्नत किस्में

गेहूं की तरह जौ की कई किस्म किसानों के बीच प्रचलित है। कृषि विज्ञान केंद्र अयोध्या में जौ की चार किस्म का प्रदर्शन किया गया है। किसानों को जौ की खेती के लिए प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष बीपी शाही ने बताया कि उनके यहां डीडब्ल्यूआरबी137 जौ की उन्नत किस्म है जिसका उत्पादन 55 से 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। वहीं यह 135 दिन में तैयार हो जाती है। इसी तरह डीडब्ल्यूआरबी 182 किस्म का उत्पादन 55 से 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसी के साथ आरडी 2907 किस्म का उत्पादन 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। यह 130 दिन में तैयार हो जाती है जबकि गीतांजलि छिलका रहित किस्म है। किसान इस किस्म को सबसे ज्यादा खेती कर रहे हैं क्योंकि गेहूं की तरह इस किस्म को सीधे तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

## बंगलूरूमि में भी जौ की खेती

जौ की खेती पूरे देश में बड़े सीमित भूभाग पर रह गई है। देश के भीतर जौ का सबसे ज्यादा उत्पादन बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश में होता है। भारत में हर साल 16 लाख टन जौ का उत्पादन होता है। जौ की फसल हर प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है। यहां तक की 7 से 8 पीएच वाली दोमट मिट्टी में भी इसकी खेती होती है। जौ की फसल को गेहूं के मुकाबले कम सिंचाई की जरूरत पड़ती है। यह दो से तीन सिंचाई में तैयार हो जाती है।

## धार्मिक रूप में भी जौ का इस्तेमाल

जौ का उपयोग खाद्यान्न में तो होता ही है। वहीं धार्मिक रूप में भी इसका इस्तेमाल खूब होता है। इसीलिए अब अयोध्या में रामलला के मंदिर बनने के बाद जौ की मांग में काफी ज्यादा तेजी आई है। इसीलिए अयोध्या और आसपास के क्षेत्र में जौ से बने हुए वस्तुओं की खपत बढ़ गई है जिसके चलते किसानों को भरपूर फायदा भी हो रहा है। अयोध्या स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष बीपी शाही ने बताया कि उनके फार्म पर कुल चार तरह की जौ की किस्म का प्रदर्शन किया गया है जिसमें गीतांजलि एक ऐसी किस्म है जो छिलका रहित है। इस किस्म की खेती से किसानों को काफी ज्यादा मुनाफा भी हो रहा है।



इंदौर। जागत गांव हमार

एक वक्त था जब रेशम का धागा रेशम के कीड़े को मारकर प्राप्त किया जाता था। इसलिए कई लोग रेशमी वस्त्र नहीं पहनते थे क्योंकि इसके पीछे मत यह था कि इस वस्त्र के निर्माण में हिंसा हुई है। तकनीक बदली और सोच भी। अब रेशमी वस्त्र तैयार हो रहे हैं और उसमें किसी प्रकार की हिंसा नहीं हो रही है।

जब कीड़ा अपने घर को छोड़ देता है तो उससे रेशमी धागा तैयार कर वस्त्र निर्माण किया जा रहा है और उसे अहिंसा सिल्क कहा जा रहा है। इस अहिंसा सिल्क पर पिछवाई चित्रकारी से प्रभावित होकर कढ़ाई हो रही है। दिलचस्प बात तो यह है कि पिछवाई की डोर आंध्रप्रदेश के कलाकार थामे हुए हैं। नवाचार के ऐसे और भी कई नायाब वस्त्रों के कारण इन दिनों शहर में लगी प्रदर्शनी चर्चा का विषय बनी हुई है।

**सिल्क एक्सपो-** इंदौर के बास्केटबाल कांप्लेक्स में लगा उमंग काटन व सिल्क एक्सपो ऐसे ही कई तरह के धागों से बने वस्त्रों से सजा हुआ है। रेशम की तरह ही नजर आने वाला एक और कपड़ा है जिसे बांस का कपड़ा कहा जाता है। यह कपड़ा असम में तैयार होता है। इस कपड़े से बनने वाली साड़ी पर यहां के जनजीवन की छटा देखी जा सकती है। यह साड़ी असम से शुभम दास लेकर आए हैं।

## कारीगरों का दावा: 10 साल तक नहीं होती खराब

# बांस के रेशमी धागे से बनी खूबसूरत साड़ी



## राजस्थान की पिछवाई पहुंची आंध्रप्रदेश

गोरखपुर से आए बुनकर विजय चौधरी अपने साथ महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश की वे साड़ियां लेकर आए हैं जो आज भी परंपरा को सहेजे हुए हैं। राजस्थान के नाथद्वारा में की जाने वाली पिछवाई चित्रकारी अब अहिंसा सिल्क से तैयार साड़ी पर की जाने लगी है। विजय बताते हैं कि यह साड़ी आंध्रप्रदेश के कर्णा शहर के कलाकार तैयार कर रहे हैं। इसमें पिछवाई चित्रकारी के मोटिक्स सुई-धागे की मदद से बनाए जाते हैं। पशु-पक्षी, वृक्ष, लता, पुष्प का अंकन उसी शैली में होता है जैसा पिछवाई चित्र में किया जाता है। यह कार्य पुरुष कलाकार ही करते हैं। कार्य इतना महीन होता है कि करीब छह माह में एक साड़ी तैयार हो पाती है।

## महाराष्ट्र की पैठनी साड़ी की रंगत बदली

इसी तरह अब महाराष्ट्र की पैठनी साड़ी की रंगत भी बदल गई है। इसमें पारंपरिक डिजाइन के साथ नई डिजाइन बनने लगी है जो पल्ल-बार्डर ही नहीं बल्कि पूरी साड़ी पर बन रही है। इसे भी कढ़ाई की मदद से तैयार किया जाता है। असम से आए बुनकर सुमन मूंगा सिल्क और लिनन के ताने-बाने वाली साड़ी लाए हैं। इस साड़ी की खास बात यह है कि इसमें राजस्थान का अजरक प्रिंट और गुजरात का बांधनी भी शामिल है। सब्जी को उबालकर उससे निकले रंग में कुछ रसायनों को मिलाकर जो रंग तैयार होता है उससे यह साड़ी रंगी जाती है।

## दो बांस में साड़ी तैयार

शुभम बताते हैं कि साढ़े छह मीटर की साड़ी महज दो बांस से तैयार हो जाती है। बांस को तोड़कर उसे डेढ़ माह तक पानी में भिगोकर रखा जाता है और फिर उस बांस से मशीन की मदद से धागा तैयार किया जाता है। इस धागे से बनने वाली साड़ी का बेस बांस के मूल रंग का ही होता है लेकिन उसपर बनने वाली डिजाइन रंगीन धागे से बनती है। हथकरघा से तैयार होने वाली इस साड़ी की बुनाई में भी करीब दो माह लगते हैं। यह कपड़ा करीब 10 वर्ष तक खराब नहीं होता।

# उन्नत तकनीक से धनिया की खेती किसानों के लाभकारी

» डॉ. एस.आर. शर्मा  
» डा. विशाल मेश्राम  
» डॉ. आशुतोष शर्मा  
» निधि वर्मा  
» डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी  
» डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव  
कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर

प्राचीन काल से ही विश्व में भारत देश को मसालों की भूमि के नाम से जाना जाता है। भारत धनिया का प्रमुख निर्यातक देश है। धनिया भोजन को सुगंधित एवं स्वादिष्ट बनाने के काम आती है। धनिया बीज में बहुत अधिक औषधीय गुण होने के कारण कुलिनरी के रूप में, कार्मिनेटीव और डायरेटिक के रूप में उपयोग में आते हैं। धनिया अम्बेली फेरी या गाजर कुल का एक वर्षीय मसाला फसल है। इसका हरा धनिया सिलेन्ट्रो या चाइनीज पर्सले कहलाता है।

मग्न में धनिया की खेती 1,16,607 हे. में होती है, जिससे लगभग 1,84,702 टन उत्पादन प्राप्त होता है। औसत उपज 428 कि.ग्रा./हे. है। मग्न के गुना, मंदसौर, शाजापुर, राजगढ़, विदिशा, छिंदवाड़ा आदि प्रमुख धनिया उत्पादक जिले हैं। नरसिंहपुर में गन्ने के साथ अंतरवर्तीय फसल के रूप धनिया का उत्पादन होता है।

**उपयोग एवं महत्व:** धनिया एक बहुमूल्य बहुउपयोगी मसाले वाली आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी फसल है। धनिया के बीज एवं पत्तियाँ भोजन को सुगंधित एवं स्वादिष्ट बनाने के काम आते हैं। धनिया बीज में बहुत अधिक औषधीय गुण होने के कारण कुलिनरी के रूप में, कार्मिनेटीव और डायरेटिक के रूप में उपयोग में आते हैं। भारत धनिया का प्रमुख निर्यातक देश है। धनिया के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती है।

**भूमि का चुनाव एवं उसकी तैयारी:** धनिया की सिंचित फसल के लिये अच्छा जल निकास वाली अच्छी दोमट भूमि सबसे अधिक उपयुक्त होती है और असिंचित फसल के लिये काली भारी भूमि अच्छी होती है। धनिया क्षारीय एवं लवणीय भूमि को सहन नहीं करता है। अच्छे जल निकास एवं उर्वरा शक्ति वाली दोमट या मटियार दोमट भूमि उपयुक्त होती है। मिट्टी का पी.एच. 6.5 से 7.5 होना चाहिए। धनिया की बुआई पूर्व सुनिश्चित करें कि बुआई के समय खेत में ढेले नहीं होने चाहिए।

**बोनी का समय:** धनिया की फसल रबी मौसम में बोई जाती है। धनिया बोने का सबसे उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर है। धनिया की सामयिक बोनी लाभदायक है। दानों के लिये धनिया की बुआई का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है। हरे पत्तों की फसल के लिये अक्टूबर से दिसम्बर का समय बिजाई के लिये उपयुक्त है। **बीज दर:** सिंचित अवस्था में 15-20 कि.ग्रा./हे. बीज तथा असिंचित में 25-30 कि.ग्रा./हे. बीज की आवश्यकता होती है।

**बीजोपचार:** भूमि एवं बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बीज को कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम, ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। बीज जनित रोगों से बचाव के लिये बीज को स्टेप्टोमाइसिन 500 पीपीएम से उपचारित करना लाभदायक है।

**खाद एवं उर्वरक:** असिंचित धनिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए गोबर खाद 20 टन/हे. के साथ 40 कि.ग्रा. नत्रजन, 30 कि.ग्रा. स्फुर, 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से तथा 60 कि.ग्रा. नत्रजन, 40 कि.ग्रा. स्फुर, 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से तैयार करें।

**बोने की विधि:** बोने के पहले धनिया बीज को सावधानीपूर्वक हल्का राइडर बीजों को दो भागों में तोड़ कर दाल बनावें। धनिया की बोनी सीड डील से कतारों में करें। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 10-15 से.



मी. रखें। भारी भूमि या अधिक उर्वरा भूमि में कतारों की दूरी 40 से.मी. रखना चाहिए। **अंतरवर्तीय फसलें:** गन्ने के 4 फीट के कतार से कतार दूरी में दो कतार पत्तियों हेतु धना या एक कतार बीज हेतु बुआई करनी चाहिए।

**फसल चक्र:** धनिया-मूंग, धनिया-भिण्डी, धनिया-सोयाबीन, धनिया-मक्का आदि फसल चक्र लाभ दायक पाये गये हैं।

**सिंचाई प्रबंधन:** धनिया में पहली सिंचाई 30-35 दिन बाद, दूसरी सिंचाई 50-60 दिन बाद, तीसरी सिंचाई 70-80 दिन बाद तथा चौथी सिंचाई 90-100 दिन बाद करना चाहिए। हल्की जमीन में पांचवी सिंचाई 105-110 दिन बाद करना लाभदायक है।

**कीट प्रबंधन: माहू/चेपा (एफिड):** धनिया में मुख्यतः माहू/चेपा रसचूसक कीट का प्रकोप होता है। हरे रंग वाले शिशु व प्रौढ़ दोनों ही पौधे के तनों, फूलों एवं बनते हुए बीजों जैसे कोमल अंगों का रस चूसते हैं। चेपा की रोकथाम के लिए निम्न कीटनाशी दवाईयों का प्रयोग करें। नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 ई.सी. 200 मिली या थाओमेथाक्जाम 25 डब्ल्यू सी. 200 ग्रा. प्रति हेक्टेयर 500 ली. पानी के साथ प्रयोग करें।

**रोग प्रबंधन: उकठा उग्रा विल्टडोग:** उकठा रोग फ्यूजेरियम आक्सिस्पोरम एवं फ्यूजेरियम कोरिएनडी कवक के द्वारा फैलता है। इस रोग के कारण पौधे मुरझा जाते हैं और पौधे सूख जाते हैं। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें एवं उचित फसल चक्र अपनाएं। बीज की बुवाई नवम्बर के प्रथम से द्वितीय सप्ताह में करें। बुवाई के पूर्व बीजों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू पी 3 ग्रा./कि.ग्रा. या ट्रायकोडर्मा विरिडी 5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। उकठा के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू पी 2.0 ग्रा./ली. या उकठा के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू पी 2.0 ग्रा.धली. या हेक्जाकोनोजॉल 5 ईसी 2 एमएलधली. या मेटालेक्जल 35 प्रतिशत 1 ग्रा./ली या मेटालेक्जलमेंकोजेब 72 एम जेड 2 ग्रा./ली. दवा का छिड़काव कर जमीन को तर करें।

**तना पिटिका (स्टेममॉल):** यह रोग प्रोटोमाइसेस मेक्रोस्पोरस कवक के द्वारा फैलता है। रोग के कारण फसल को अत्यधिक क्षति होती है। पौधों के तनों पर सूजन हो जाती है। तनों, फूल वाली टहनियों एवं अन्य भागों पर गांठें बन जाती हैं। बीजों में भी विकृतियाँ आ जाती हैं। रोग का प्रबंधन के निम्न उपाय है।

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें एवं उचित फसल चक्र अपनाएं। बीज की बुवाई नवम्बर के प्रथम से द्वितीय सप्ताह में करें। बुवाई के पूर्व बीजों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू पी 3 ग्रा./कि.ग्रा. या ट्रायकोडर्मा विरिडी 5 ग्रा./कि. ग्रा.बीज की दर से उपचारित करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर स्टेप्टोमाइसिन 0.04 प्रतिशत (0.4 ग्रा./ली.) का 20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

**चूर्णिलआसिता/भभूतिया/धौरिया (पावडरी मिल):** यह रोग इरीसिफो पॉलीगॉन कवक के द्वारा फैलत रोग की प्रारंभिक अवस्था में पत्तियों एवं शाखा सफेद चूर्ण की परत जम जाती है। अधिक पत्तियों पीली पड़कर सूख जाती है। इस रोग का प्रबंधन निम्न प्रकार से करें। रोग नियंत्रण हेतु फेरोथेन या एजाक्सीस्टोरोबीन 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

**कटाई:** फसल की कटाई उपयुक्त समय पर करनी चाहिए। धनिया दाना दबाने पर मध्यम कठोर तथा पत्तिया पीली पड़ने लगे, धनिया डोड़ी का रंग हरे से चमकीला भूराधुली होने पर तथा दानों में 18 प्रतिशत नमी रहने पर कटाई करना चाहिए। कटाई में देरी करने से दानों का रंग खराब हो जाता है। जिससे बाजार में उचित कीमत नहीं मिल पाती है।

## वैज्ञानिकों ने सुझाया रास्ता, मंगल ग्रह की मिट्टी में कैसे बढ़ सकती है सब्जियों की पैदावार

अंतरिक्ष में मानव बस्तियों को आबाद करना एक ऐसा सपना है, जिसे इंसान सदियों से देख रहा है। हालांकि यह तभी मुमकिन हो सकता है, जब इसके लिए वहाँ पर्याप्त मात्रा में भोजन, पानी और ऑक्सीजन उपलब्ध हो। इसी कड़ी में वैज्ञानिकों ने अपने एक नए अध्ययन में जांच की है कि कैसे मंगल ग्रह पर सब्जियों की पैदावार में इजाजा किया जा सकता है।

अध्ययन में वैज्ञानिकों को इस बात के प्रमाण मिले हैं कि मंगल ग्रह पर एक साथ कई किस्मों की फसलें उगाने से सब्जियों की पैदावार बढ़ सकती है। यह अध्ययन नीदरलैंड की वैगनिंगन यूनिवर्सिटी एंड रिसर्च से जुड़े शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, जिसके नतीजे ओपन-एक्सेस जर्नल प्लोस वन में प्रकाशित हुए हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि यदि इंसान को मंगल ग्रह पर बसना है तो उसे अपना अधिकांश भोजन वहीं उगाना होगा। इसके लिए वहाँ की मिट्टी का उपजाऊ होना भी जरूरी है, लेकिन पृथ्वी से मिट्टी या उर्वरक ले जाना कोई बेहतर विकल्प नहीं है। ऐसे में अध्ययन में शोधकर्ताओं ने फसलों की पैदावार को बढ़ाने के लिए 'इंटरक्रॉपिंग' पद्धति का उपयोग किया है। 'इंटरक्रॉपिंग' एक ऐसी पद्धति है जिसमें एक दूसरे के लिए फायदेमंद अलग-अलग फसलों को एक साथ आसपास उगाया जाता है।

उनका मकसद यह जानना था कि क्या अलग-अलग फसलों को एक साथ उगाने से मंगल ग्रह पर अधिक सब्जियाँ पैदा करने में

मदद मिल सकती है और वो कौन सी ऐसी फसलें हैं जिन्हें एक साथ उगाया जा सकता है। हालांकि यह परीक्षण धरती पर किया गया था, लेकिन इस दौरान शोधकर्ताओं ने ग्रीनहाउस के अंदर मंगल पर मिलने वाली मिट्टी के समान संरचना में पौधे लगाए थे।

**साथ-साथ बोए जाने पर कौन सी फसल रही कामयाब:** इस अध्ययन के

कितनी अच्छी तरह विकसित होंगे।

इन पौधों को वैज्ञानिकों ने एक जैसी देखभाल दी। जैसा कि अपेक्षित था, उन्होंने पाया कि उनके ग्रीनहाउस में तीनों प्रकार के पौधे अच्छी तरह विकसित हुए। उन्हें यह भी पता चला कि जिन गमलों में टमाटर और मटर के पौधे एक साथ लगाए गए थे, वो अकेले बोए गए पौधों की तुलना में बेहतर विकसित हुए थे।

ऐसा इसलिए है क्योंकि टमाटर के पौधों के पास हरी मटर उगाने से टमाटर और मटर दोनों को बेहतर तरीके से बढ़ने में मदद मिलती है। यही वजह है कि जिन गमलों में टमाटर और मटर के पौधों को साथ बोया गया उसमें लगे टमाटर आकार में बड़े थे और उनमें पोर्टेसियम भी अधिक था।

ऐसा क्यों हुआ? रिसर्च में इस बात का भी जवाब दिया है, शोधकर्ताओं के मुताबिक हरी मटर हवा से नाइट्रोजन सोख कर, उसे अमोनिया में बदल देती है, जो टमाटर के पौधों के लिए प्राकृतिक उर्वरक की तरह काम करती है। नतीजन उसने टमाटर की पैदावार को बढ़ाने में मदद दी। शोधकर्ताओं को यह भी पता चला कि कुछ गमलों में मिट्टी के साथ रेत डालने से उपज में वृद्धि हुई।

हालांकि दूसरी तरफ जब शोधकर्ताओं ने मटर और गाजर को एक साथ बोया, तो वे उतने बड़े नहीं हुए और उनकी पैदावार घट गई। इसका मतलब है कि यह दोनों साथ-साथ उगाने की जगह अकेले कहीं बेहतर पैदावार देते हैं।

दौरान उन्होंने गमलों में मंगल ग्रह से मिलती जुलती और कुछ में धरती पर मिलने वाली आम मिट्टी भर दी। इसके बाद इन गमलों को ग्रीनहाउस में रख दिया। इन गमलों में टमाटर, गाजर, और हरी मटर लगाई गई थी। पिछले शोधों से भी पता चला है कि यह तीनों ही फसलें मंगल ग्रह की मिट्टी में उग सकती हैं। इनमें से कुछ गमलों में केवल एक ही प्रकार के पौधे थे, जबकि अन्य में यह देखने के लिए एक से अधिक किस्में लगाई गईं, कि वे पौधे एक तरह की मिट्टी में एक साथ



## पशुओं में न्यूमोनिया: लक्षण एवं उपचार

- » डॉ. शिल्पा गजभिये
- » डा. डॉ. पूजा दीक्षित
- » डॉ. कंचन वलवाडकर
- » डॉ. पूनम शाक्या
- » डॉ. प्रिया सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)



सर्दी के मौसम में पशु विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। इन्हीं रोगों में एक अत्याधिक घातक रोग है- न्यूमोनिया।

यह रोग मुख्यतः फेफड़े में संक्रमण से होता है। वातावरण में मौजूद बैक्टीरिया एवं वायरस साँस के द्वारा फेफड़ों में पहुँच जाते हैं। पशुओं के रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर भी पशु न्यूमोनिया से ग्रसित हो सकते हैं।

**लक्षण:** छोटे पशुओं में लक्षण तुरन्त दिखाई नहीं देते हैं, अपितु अगर छोटे पशु बीमार लगे तो उन्हें न्यूमोनिया हो सकता है। अन्य लक्षण जैसे-सर्दी, तेज बुखार, शरीर एवं मांसपेशियों में दर्द, कफ कम्पन, साँस लेने में दिक्कत होना, इत्यादि इस रोग के मुख्य लक्षण हैं।

न्यूमोनिया में फेफड़ों में तरल पदार्थ भर जाने के कारण ऑक्सीजन लेने में कठिनाई होने लगती है।

**कारण:** न्यूमोनिया होने के अनेकों कारण हो सकते हैं, जैसे - जीवाणु, विशाणु, फफूँद, कृमि जनित इत्यादि। कई बार ड्रेन्चिंग न्यूमोनिया भी पशुओं में हो सकता है।

1-जीवाणु: जैसे- माइकोप्लाज्मा, स्ट्रेप्टोकोकस, स्टाइफ्लोकोकस आदि जीवाणु जनित न्यूमोनिया।

2- विशाणु: जैसे- रियो, राइनो, कोरोना, बोवाइन एवं केपराइन व्हायरस निमोनिया आदि से न्यूमोनिया होता है।

3- कृमि: जैसे- टोक्सोप्लाज्मा, डिक्टियोकोलस, एस्केरिस इत्यादि से वरमीनस न्यूमोनिया होता है।

4- फगस: म्यूकोमाइकोसिस, हीस्टोप्लाज्मा एवं ब्लास्टो स्पेरीजी से न्यूमोनिया होता है।

5- ड्रेन्चिंग न्यूमोनिया: तरल दवाईयों का सेवन कई बार बॉस की नाल, रबर से बनी नली अथवा बॉटल के द्वारा देने पर दवा का घोल का कुछ भाग पेट में ना जाकर, फेफड़ों में चला जाता है, जिससे न्यूमोनिया हो जाता है। यह रोग पशुपालकों की लापरवाही से उत्पन्न होने वाला रोग है। कई बार तरल पदार्थ अधिक मात्रा में श्वास नली में चला जाता है तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

6- अन्य कारण अत्याधिक सर्द मौसम, पर्याप्त हवादार कमरों का अभाव, मौसम में बदलाव एवं धूल कण का श्वास नली में होने से भी होता है।

**उपचार:** पशुओं को पर्याप्त हवादार कमरों में रखें, पर्याप्त सूर्य की रोशनी युक्त एवं साफसुथरे बाड़ों में रखें। पशुओं का सर्दी से बचाव करें, उन्हें कमरों को गर्म रखने वाले उपकरण युक्त कमरों में रखें। अधिक गंभीर रोगी पशुओं को पशु चिकित्सालय द्वारा इलाज करावायें।

**न्यूमोनिया में दी जाने वाली दवाएँ**  
एण्टिबायोटिक, जैसे - टेट्रासाइक्लिन, स्टेप्टोनीसीलीन, एम्पीसीलीन, एमोक्सिसिलीन एवं क्लोवसासीलीन वाली दवा। एण्टिहीसटामीनीक एवं दर्द निवारक दवा डॉक्टर की सलाह पर देना चाहिए। ब्रोन्कोडायलेटर एवं एक्सपेक्टोरेंट इत्यादि दवा केवल डॉक्टर के परामर्श पर देना चाहिए।

# नई वैरायटी की खासियत-कम पानी, उर्वरक और कम खर्च में सामान्य धान की तुलना में अधिक उपज मप्र के किसानों के लिए बाजार में आया नया मंसूरी धान

भोपाल। जागत गांव हमार

धान खरीफ सीजन की मुख्य फसल है। धान की खेती करने वाले ज्यादा किसान इस उम्मीद में खेती करते हैं कि उन्हें अन्य फसलों के मुकाबले इससे अच्छा उत्पादन और अधिक मुनाफा मिल सके। वहीं मई आते ही कई राज्यों में किसान धान की बिजाई यानी नर्सरी लगाना शुरू कर देते हैं। साथ ही किसान चाहते हैं कि वो ऐसी किस्मों की खेती करें जिससे उनकी फसल जल्दी तैयार हो जाए और बढ़िया उत्पादन भी मिले, लेकिन ज्यादातर किस्मों के तैयार होने में 130-140 दिन लग जाते हैं, जिससे आगे की खेती में देरी हो जाती है। किसानों के इन्ही परेशानियों के समाधान के लिए मार्केट में नया किस्म मंसूरी धान आया है। आइए जानते हैं इस नई वैरायटी से कितनी उपज मिलेगी।

इस किस्म का नाम है सबौर मंसूरी धान। इस धान की खासियत ये है कि कम पानी, उर्वरक और कम खर्च में सामान्य धान की तुलना में अधिक उपज देती है। धान की नई वैरायटी सबौर मंसूरी से लगभग डेढ़ गुना अधिक उपज मिलती है। केंद्र से इस किस्म की अधिसूचना एक महीने में जारी हो जाएगी। ऐसे में इस खरीफ मौसम में ही किसान इस धान की खेती



कर सकेंगे। वहीं इस धान की खास बात ये है कि इस धान के बीज को बिना रोपनी के सिधी बिजाई से भी लगा सकते हैं। साथ ही इसका औसत उत्पादन 65 से 70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। वहीं अधिकतम उत्पादन की बात करें तो वो 122 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। इसके अलावा ये धान सीधी बोवनी में 135 से 140 दिनों में तैयार हो जाता है।

नौ राज्यों में होगी खेती - सबौर मंसूरी धान का

उत्पादन देश के 9 राज्यों में किया जाएगा। इसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तेलंगाना और पुडुचेरी शामिल हैं। धान की इस नई किस्म की खोज बिहार कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने की है। वहीं पिछले 4 वर्षों तक बिहार सहित देश के 19 राज्यों में अखिल भारतीय समन्वित धान सुधार परियोजना के तहत 125 केंद्रों पर परीक्षण किया गया था।

## इन जिलों में हुआ परीक्षण

बिहार में इसका परीक्षण, किशनगंज, सहरसा, मधेपुरा, भागलपुर, लखीसराय, बेगूसराय, बक्सर, औरंगाबाद, गया, रोहतास और पटना में किया गया था। इस जांच में वैज्ञानिकों को बेहतर परिणाम देखने को मिले। वहीं वैज्ञानिकों ने बताया कि इस वैरायटी के पौधे में औसतन 18 से 20 कल्ले होते हैं, जिसमें 300 से अधिक दाने पाए जाते हैं। दाने का रंग सुनहरा होता है। साथ ही यह नाटी मंसूरी के दाने जैसा होता है।

## कीट और रोग प्रतिरोधी क्षमता

धान की इस प्रजाति में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। ये धान झुलसा और झोंका रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। साथ ही तना छेदक और भूरा पत्ती लपेटक कीट के प्रति सहनशील है। साथ ही इसका तना भी बहुत मजबूत होता है। जिससे ये बदलते मौसम और बार-बार आने वाले आंधी-तूफान में भी नहीं गिरेगा।

## खेती बनेगी लाभ का धंधा: कम लागत में होगी बंपर उपज

# खरीफ में अरहर की बोवनी का सही तरीका जानें किसान, बढ़ेगी आमदनी

भोपाल। जागत गांव हमार

खरीफ सीजन में अरहर की बुवाई की तैयारियों में जुटे किसानों को बुवाई और दवाओं के छिड़काव का सही तरीका जानना बेहद जरूरी है। क्योंकि, बंपर उपज पाने के लिए लापरवाही से किसानों को बचना होगा। अरहर की बुवाई के लिए खेत और मिट्टी तैयार करने के साथ ही बीज और उर्वरक की सही मात्रा का होना जरूरी है। आइये यहां समझते हैं कम लागत में अधिक उपज हासिल करने का तरीका। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केंद्र के अनुसार अरहर की बुवाई के लिए जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के दूसरे सप्ताह तक करनी चाहिए। अगर सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो तो जून के पहले हफ्ते में भी इसकी बुवाई कर सकते हैं। अरहर की बुवाई के लिए किसान इस बात का ध्यान रखें कि खेती की मिट्टी खारी न हो और मिट्टी का पीएच मान 5 से 8 के बीच हो। इसके अलावा जल निकासी वाली हल्की या मध्यम भारी मिट्टी अरहर की बुवाई के लिए ज्यादा ठीक रहती है। बोवनी से पहले किसान खेत की मिट्टी को पलटने वाले कल्टीवेटर हल से अच्छी तरह दो बार जुताई कर लें। जुताई के समय यदि मिट्टी में कीड़ा या दीमक का पता चले तो हेप्टाक्लोर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिला दें। इसके साथ ही गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के हिसाब से जुताई के समय खेत की मिट्टी में मिला दें।

**बीज की सही दूरी जरूरी-** किसान अरहर की बुवाई से ठीक 48 घंटे पहले 2.5 ग्राम फफूंदी खत्म करने वाली जैसे थीरम अथवा कैप्टान से प्रति किलो बीज में मिलाएं। बुआई के ठीक पहले फफूंद खत्म करने वाली दवा मिलाने के बाद बीज कोराईजोबियम कल्चर और पीएसबी से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। खरीफ में बीज की बुआई की दूरी 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंटीमीटर करनी चाहिए।



## उर्वरक के इस्तेमाल का तरीका

अरहर की फसल को नाइट्रोजन की बहुत कम जरूरत होती है क्योंकि इसकी जड़ों में पाये जाने वाले जीवाणु वायुमंडल से नाइट्रोजन हासिल करके पौधे को पहुंचाता है। बोवनी के 40 से 45 दिनों तक 18 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की जरूरत पड़ती है। अरहर को 18 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन 45 किलो फास्फोरस, 25 किलो पोटास और 20 किलो गंधक प्रति हेक्टेयर में डालने की जरूरत पड़ती है।

## नुकसान पहुंचा सकता है पानी

अरहर की फसल में सिंचाई की जरूरत पर ही पानी देना चाहिए। अधिक पानी देने से फाइटोफथोरा जैसी बीमारियां पौधे में पनप सकती हैं, जो फसल के लिए घातक साबित हो सकती है। इसके अलावा अधिक सिंचाई से फसल पकने की अवधि भी बढ़ जाती है, जो किसान की लागत को बढ़ा सकती है।

## अरहर की कब करें सिंचाई

खरीफ सीजन में बोई जाने वाली अरहर में सिंचाई की आवश्यकता बेहद कम होती है। इस सीजन में अरहर की फसल को तभी पानी की जरूरत होती है, जब बारिश का अभाव हो। ऐसे में पौधे पर फूल आने के समय और फलियों में दाना पड़ने के समय सिंचाई करनी होती है। हालांकि, जल्दी पकने वाली अरहर किस्मों को पानी की अधिक जरूरत होती है। क्योंकि फसल में पौधों की संख्या अधिक होती है। अरहर की फसल में फलियों में दाना पड़ने के समय सिंचाई करने से उत्पादन में भारी व बढ़ोत्तरी होती है।

## उगाने की तैयारी में जुटे किसान अपनाएं विधि

# 250-500 रुपए किलो बिकता है काला चावल

भोपाल। जागत गांव हमार

अधिक कीमत और कई पोषक तत्वों से लैस होने के चलते काला धान की बाजार में खूब मांग है। खरीफ सीजन में काला धान की बुवाई की तैयारी कर रहे किसान आधुनिक विधियां अपनाकर बंपर उपज हासिल कर सकते हैं। काला धान की किस्मों में कालाबाती और चखाओ खूप पॉपुलर हैं। काला चावल की बाजार में कीमत 250 से 500 रुपए किलो तक मिल रही है। खरीफ सीजन में काला धान की बुवाई के लिए सबसे पहले खेत को तैयार करना जरूरी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केंद्र के अनुसार धान की फसल के लिए खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करके खेत तैयार करना चाहिए। इसके अलावा खेत की मजबूत मेड़बंदी करनी चाहिए, ताकि बारिश का पानी अधिक समय तक खेत में रोका जा सके। धान की रोपाई से पहले खेत को पानी भरकर जुताई कर दें और जुताई करते समय खेत को समतल करना न भूलें।

**दूसरी धान से बड़ा होता है पौधा-** काला चावल की पैदावार सबसे पहले चीन में हुई थी, बाद में यह भारत के मणिपुर में उगाया जाने लगा। इसे मणिपुर काला धान या चखाओ काला धान के नाम से जाना जाता है। इसे अनुकूल मौसम और जलवायु के चलते असम और सिक्किम और ओडिशा समेत कुछ अन्य राज्यों के अलग-अलग हिस्सों में भी उगाया जाता है। यह काला धान 100 से-120 दिन में तैयार हो जाता है और इसका पौधा पौधा 4.5 फीट की ऊंचाई तक पहुंच सकता है, जो आम धान फसल के पौधे की तुलना में बड़ा होता है।

## जैविक विधि से उगाई जाती है धान

काला चावल को अपना काला आकर्षक रंग एंथोसायनिन से मिलता है, एक प्राकृतिक काले रंग का रंगद्रव्य जो इन चावलों को असाधारण एंटीऑक्सीडेंट और अन्य हेल्थ बेनेफिट्स वाला बना देता है। इसे जैविक तरीके से उगाया जाता है, जिससे इसकी न्यूट्रीशन वैल्यू बढ़ जाती है। किसान काला धान बुवाई के दौरान जीबामृत, कर्मीकम्पोस्ट और जैव उर्वरकों का इस्तेमाल करते हैं। इसकी खेती में रासायनिक खादों के इस्तेमाल से बचा जाता है।

## एक एकड़ में 15 क्विंटल तक उत्पादन

काला धान की फसल का भी आम धान फसल की तरह ही बाली की शुरुआत और दाना भराव होता है। इसका उत्पादन औसतन प्रति एकड़ 12-15 क्विंटल होता है। काले चावल का इस्तेमाल ज्यादातर औषधि के रूप में खीर के रूप में किया जाता है। काला चावल का आटा, सूजी, सिरप, बीयर, वाइन, केक, ब्रेड, लड्डू और अन्य मीठे खाद्य पदार्थ और ब्यूटी प्रोडक्ट समेत कुछ अन्य वस्तुओं को बनाने में किया जाता है।

## 500 रुपए किलो तक कीमत

काला धान की खेती आम धान की तरह ही की जाती है, लेकिन इसका चावल अन्य किस्मों की तुलना में दोगुनी कीमत पर बिकता है। आमतौर पर सामान्य धान का चावल 50-60 रुपए प्रति किलो में बिकता है। जबकि, काला चावल बाजार में 200 से 500 रुपए किलो तक बिकता है। इसे खाड़ी देशों के साथ ही कई यूरोपीय देशों में निर्यात किया जाता है।



42 टन प्रति हेक्टेयर किसानों को मिलेगी पैदावार

# मध्यप्रदेश के लिए तैयार की गई प्याज की नई किस्म

भोपाल। जागत गांव हमार

देशभर में प्याज की कीमत हमेशा चर्चा का विषय रही है। जिसके चलते किसानों से लेकर रसोईया तक हर कोई प्याज का विकल्प तलाश रहा है। ऐसे में राज्य में इस संकट को दूर करने के लिए इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय प्याज की लोकप्रिय किस्म भीमा शुभा को तैयार किया है। परियोजना से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक प्याज की पांच उन्नत किस्मों में से भीमा शुभा प्याज की पैदावार छत्तीसगढ़ की जलवायु में अच्छी पाई गई है। खासकर खरीफ सीजन में इस प्याज की पैदावार लगभग 42 टन प्रति हेक्टेयर तक मिलती है। खरीफ में प्याज की खेती कम की जाती है, लेकिन इसके विपरीत कृषि विशेषज्ञों ने प्याज की फसल लगाई और सफल परिणाम मिले। इसी तरह अगर किसान इन इलाकों में प्याज की खेती करते हैं तो इससे प्याज का उत्पादन बढ़ेगा। जिससे प्रदेश में प्याज की कमी नहीं होगी। वहीं प्याज की यह किस्म का इस्तेमाल बेहतर उत्पादन के लिए किए जा रहा है।

**भीमा शुभा किस्म-** सफेद प्याज की यह भीमा शुभा किस्म छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान और तमिलनाडु में खरीफ मौसम के लिए अनुमोदित की गयी है। महाराष्ट्र में पछेती खरीफ के लिए भी इसे अनुमोदित किया गया है। खरीफ में यह 110-115 दिन और पछेती खरीफ में 120-130 दिन में यह पककर तैयार हो जाती है। मध्यम भंडारण की यह किस्म मौसम के उतार-चढ़ाव के प्रति सहिष्णु है। खरीफ में 18-20 टन/हेक्टेयर और पछेती खरीफ में 36-42 टन/हेक्टेयर तक इसकी उपज प्राप्त की जा सकती है।



## कैसे तैयार करें खेत

प्याज के सफल उत्पादन में भूमि की तैयारी का विशेष महत्व है। खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। इसके बाद 2 से 3 जुताई कल्टीवेटर या हैसे से करें, प्रत्येक जुताई के बाद फावड़ा अवश्य चलाएं ताकि नमी बनी रहे और मिट्टी भी भुरभुरी हो जाए। जमीन की सतह से 15 सेमी ऊंचाई पर 1.2 मीटर चौड़ी पट्टी पर रोपण किया जाता है, इसलिए खेत को रेज्ड-बेड प्रणाली से तैयार करना चाहिए।

## ऐसे करें बीजोपचार

नर्सरी में बीज बोने से पहले बीजों को बाकिस्टिन से उपचारित करें। इसके लिए 2 ग्राम बाकिस्टिन को 1 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार करें और फिर इस तैयार मिश्रण से 1 किलोग्राम प्याज के बीज को उपचारित करें। इसके अलावा डैमिंग ऑफ और अन्य बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए 1 किलो बीज के लिए 8-10 ग्राम ट्राइकोडर्मा विराइड को 50 मिलीलीटर पानी में मिलाकर जैव कवकनाशी का उपयोग करें।

## राज्यवार प्याज की उन्नत किस्म

**कर्नाटक- तेलंगना:** नासिक लाल प्याज (एन-53), रॉयल सेलेक्शन प्याज, जेएससी नासिक लाल प्याज (एन-53), प्रेमा 178 प्याज।  
**आंध्र प्रदेश:** नासिक लाल प्याज (एन-53), जेएससी नासिक लाल प्याज (एन-53), प्रेमा 178 प्याज, गुलमोहर प्याज।  
**मध्य प्रदेश:** नासिक लाल प्याज (एन-53), गुलमोहर प्याज, लक्ष्मी प्याज के बीज डायमंड सुपर, रॉयल सेलेक्शन प्याज।  
**महाराष्ट्र:** नासिक लाल प्याज (एन-53), गुलमोहर प्याज, जेएससी नासिक लाल प्याज (एन-53), रॉयल सेलेक्शन प्याज, लक्ष्मी प्याज के बीज डायमंड सुपर।  
**उत्तर प्रदेश:** नासिक लाल प्याज (एन-53), रॉयल सेलेक्शन प्याज, जेएससी नासिक लाल प्याज (एन-53), प्रेमा 178 प्याज, गुलमोहर प्याज

देश में चावल, दाल और तिलहन का बड़ा रकबा

# ग्रीष्मकालीन फसलों की बोवनी में आया उछाल

भोपाल। जागत गांव हमार

ग्रीष्मकालीन फसलों के एरिया में इस साल बंपर उछाल आया है। चावल, दलहन, मोटे अनाजों और तिलहन चार प्रमुख फसलों के एरिया में पिछले साल के मुकाबले इजाफा हो गया है। पिछले वर्ष के मुकाबले इस साल ग्रीष्मकालीन फसलों के एरिया में 4.89 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुसार 3 मई 2024 तक 72.76 लाख हेक्टेयर में फसलों की बुवाई हो चुकी है, जबकि 2023 में इसी अवधि में सिर्फ 67.86 लाख हेक्टेयर में ही ग्रीष्मकालीन फसलों की बोवनी हुई थी। सभी प्रमुख फसलों के एरिया में वृद्धि को सरकार काफी सकारात्मक मान रही है, क्योंकि इससे कृषि उत्पादों की महंगाई कम करने में मदद मिलेगी। ग्रीष्मकालीन चावल के तहत लगभग 30.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र कवरेज की सूचना दी गई है, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह 27.55 लाख हेक्टेयर थी। यानी धान की खेती का एरिया इस साल 3 मई तक 2.75 लाख हेक्टेयर बढ़ गया है। ग्रीष्मकालीन चावल के पिछले पांच साल के औसत एरिया की बात करें तो यह 27.69 लाख हेक्टेयर था।

**दलहन फसलों का रकबा बढ़ा -** खरीफ और रबी सीजन में दलहन के मोर्चे पर लगातार बोपनी का रकबा कम होने की नकारात्मक खबरें मिल रही थीं। लेकिन ग्रीष्मकालीन दलहन फसलों का एरिया बढ़ गया है। दलहन फसलों पर पिछले वर्ष की 3 मई तक की अवधि के दौरान 19.43 लाख हेक्टेयर की तुलना में इस बार लगभग 20.20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र कवरेज की सूचना दी गई है। इस तरह कुल दलहन क्षेत्र में 0.765 लाख हेक्टेयर का इजाफा हुआ है। मूंग का एरिया बढ़ा है। हालांकि उड़द की बोवनी में मामूली कमी देखने को मिली है।



## मोटे अनाजों की बोवनी

श्री अन्न यानी मोटे अनाजों के एरिया में इस साल 1.025 लाख हेक्टेयर का इजाफा हुआ है। पिछले वर्ष 3 मई तक हुई 11.05 लाख हेक्टेयर में बोवनी की तुलना में इस साल इसी अवधि में 12.08 लाख हेक्टेयर क्षेत्र कवरेज की सूचना दी गई है। ज्वार, बाजरा और मक्का का एरिया बढ़ा है। हालांकि रागी के एरिया में मामूली कमी देखी गई है।

## तिलहन फसलों का रकबा बढ़ा

तिलहन फसलें भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि कृषि उत्पादों में सबसे ज्यादा आयात हम इसी का कर रहे हैं। इस पर सालाना करीब 1.4 लाख करोड़ रुपए खर्च हो रहे हैं। पिछले वर्ष यानी 3 मई 2023 तक 9.83 लाख हेक्टेयर में ग्रीष्मकालीन तिलहन की बोवनी हुई थी, जबकि इस साल यह बढ़कर 10.19 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। मूंगफली की बुवाई 4.702 लाख हे., सूरजमुखी की 0.344 और तिल ही बोवनी 4.894 लाख हेक्टेयर में हुई है।

-विद्य के किसान मिट्टी करा रहे जांच, अभी जबलपुर या बाहर के लैब में भेजे जाते थे सैपल

# अब रीवा कृषि कॉलेज में भी शुरू हुआ मृदा परीक्षण

रीवा। जागत गांव हमार

कृषि महाविद्यालय के मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग में मृदा एवं पौध पोषक तत्व विश्लेषण में कार्य किया जा रहा है, जिसमें कृषि महाविद्यालय में संचालित सभी परियोजनाओं के नमूने की जांच की जा रही है। पूर्व में नमूनों की जांच कृषि महाविद्यालय जबलपुर एवं अन्यत्र प्रयोगशालाओं से कराया जाता था, लेकिन अब अधिष्ठाता डॉ. एस के त्रिपाठी एवं शुष्क परियोजना इन्वार्ज डॉ. आरके तिवारी के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में प्रयोगशाला प्रभारी एवं विभाग प्रमुख डॉ. जीडी शर्मा के द्वारा मृदा एवं पौधों के नमूनों का विश्लेषण किया जा रहा है। प्रयोगशाला में परा स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों के अनुसंधान का भी कार्य हो रहा है। साथ ही आसपास के किसानों के मिट्टी परीक्षण की भी जांच की जा रही है।

## स्कूल स्वायल हेल्थ कार्ड कार्यक्रम का हुआ आयोजन



स्कूल स्वायल हेल्थ प्रोग्राम के अन्तर्गत केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-एक का चयन किया गया है। जिसके तहत पंजीकृत छात्रों द्वारा मृदा नमूना एकत्र कर प्रयोगशाला में विश्लेषण कर किया जाकर कक्षकों को स्वायल हेल्थ कार्ड वितरित किया जाएगा। गत दिवस विद्यालय में पंजीकृत शिक्षक मो. इखलाख आजाद एवं 25 छात्रों के समूह द्वारा रीवा विकासखंड अन्तर्गत

ग्राम अजगरहा मृदा नमूना एकत्रीकरण का कार्य किया गया। कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु उप संचालक कृषि यूपी बागरी, एके पांडेय, डॉ. अखिलेश पटेल, डॉ. बीपी सिंह, आरके पटेल एवं विनोद कुमार सिंह के साथ मिट्टी परीक्षण कार्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। इस दौरान डॉ. बीपी सिंह द्वारा मिट्टी परीक्षण का महत्व एवं मोबाइल एप के माध्यम से ऑनलाइन

मृदा नमूना लेने की विधि विस्तार से समझाई गई। डॉ. अखिलेश पटेल द्वारा मृदा नमूना एकत्रीकरण का प्रैक्टिकल कराया गया। प्रशिक्षण में उप संचालक श्री बागरी द्वारा किसानों से अपील की गई कि खरीफ मौसम में पूर्व मृदा परीक्षण अनिवार्यतः करवाएं ताकि मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों के आधार पर अनुशंसित उर्वरकों का ही प्रयोग कराया जा सके। साथ ही बच्चों को भी तकनीकी सलाह दी गई। उर्वरकों के प्रयोग के बारे में समझाया गया। डॉ. एके पांडेय द्वारा मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों के महत्व, एवं अनुशंसित उर्वरकों के प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक समझाया गया। केएस बघेल वैज्ञानिक द्वारा मृदा विश्लेषण एवं विभिन्न पोषक तत्वों की जानकारी दी गई। डॉ. स्मिता सिंह वैज्ञानिक द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड, उर्वरक अनुशंसा एवं रसायन मुक्त फसल उत्पादों के बारे में छात्रों को जानकारी दी गई।

# अनाज घरों में सुरक्षित तरीके से भंडारण करें

**टीकमगढ़।** कृषि विज्ञान केन्द्र टीकमगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके जाटव एवं डॉ. आईडी सिंह द्वारा कृषकों को फसलों की गहाई उपरान्त अनाज को घरों में सुरक्षित रखने की सलाह दी गयी। किसान अनाज को घरों में कोठी, बोरे या अन्य प्रकार से भण्डारण करते हैं। भंडारण के दौरान अनाज में कई प्रकार के कीट जैसे- खपर्रा, बीटल, सुरेही, चावल का घुन, दालो का डोरा एवं चूहे काफी नुकसान पहुंचाते हैं। किसान गहाई के उपरांत अनाज को धूप में ठीक से न सुखाकर जल्द बाजी करके अनाज को घरों में भंडारित कर देते हैं ऐसे अनाज को कीट जल्दी ग्रसित करता है। किसान मेहनत से पैदा किए गए अनाज को भंडारण गृह में होने वाले नुकसान को बचाने के लिए बोरियों, कोठियों व गोदामों की सफाई एवं दवा से उपचारित करें। भंडारण गृह में तापमान व हवा का उचित प्रबंधन होना चाहिए। भंडारण कक्ष का फर्श पक्का होना चाहिए और अनाज को धूप में जब तक सुखाए कि दांत से दबाने पर कट की आवाज आए अर्थात् दानों में 10-12 फीसदी नमी रह जाए। पक्के फर्श पर लकड़ी के तखते या बांस रखकर उन पर तिरपाल बिछाकर और दीवारों से 1.5 से 2 फीट जगह छोड़ कर अनाज को बोरी रखे और बोरियों का ढेर 6 मी.6 मी. से अधिक नहीं होना चाहिए। भंडारण गृह की ऊंचाई का एक चैथाई भाग खाली रखना चाहिए।

## पाकिस्तान के विरोध के बावजूद दबादबा कायम

भारत विश्वसनीयता के बल पर एक्सपोर्ट बढ़ा पा रहा

## बासमती चावल के एक्सपोर्ट में भारत ने बनाया नया रिकॉर्ड

भोपाल। जागत गांव हमार

अंतरराष्ट्रीय बाजार में पाकिस्तान द्वारा बाधा बनने के बावजूद राइस क्रीन कहे जाने वाले भारतीय बासमती चावल के एक्सपोर्ट का नया रिकॉर्ड बन गया है। कमाई के मामले में बात करें तो एक साल में ही 25.61 फीसदी का उछाल आया है। पूरी दुनिया में भारत के बासमती चावल की खुशबू फैल रही है और इससे हम डॉलर कमा रहे हैं। बासमती चावल अब भारत से एक्सपोर्ट होने वाले कृषि उत्पादों में सबसे ऊपर हो गया है, यानी एग्री प्रोडक्ट के एक्सपोर्ट से हुई कमाई में इसकी सबसे ज्यादा हिस्सेदारी हो गई है। पाकिस्तान यूरोपीय यूनियन में भारत के बासमती चावल का जीआई टैग लेने का विरोध कर रहा है वरना हमारा एक्सपोर्ट 50 हजार करोड़ के पार चला गया होता। दुनिया में दो ही देश बासमती चावल का उत्पादन करते हैं, जिसमें भारत पहले और पाकिस्तान दूसरे नंबर पर है। भारत में 95 जिलों में इसकी खेती होती है, जबकि पाकिस्तान में 14 जिले ही इसके दायरे में आते हैं। पाकिस्तान की तमाम कोशिशों के बावजूद भारतीय बासमती की विश्वसनीयता सबसे ज्यादा है। यहां तक कि तमाम मुस्लिम देशों में भी भारतीय बासमती को ही सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। आयातकों की सूची देखकर इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

## इतनी बड़ी कमाई

डायरेक्टरेट जनरल ऑफ कमर्शियल इंटेलिजेंस एंड स्टैटिस्टिक्स के मुताबिक साल 2023-24 में भारत ने अकेले बासमती चावल को निर्यात करके 48389.2 करोड़ रुपए की कमाई की है। जबकि 2022-23 में इसके निर्यात से हमने 38524.1 करोड़ रुपए ही कमाए थे। यानी एक ही साल में बासमती चावल के एक्सपोर्ट में 9865.1 करोड़ रुपए का उछाल आया है।



## इतना बढ़ा एक्सपोर्ट

डीजीसीआईएस के अनुसार अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक भारत ने दुनिया के 100 से अधिक देशों को 52,42,511 मीट्रिक टन बासमती चावल का एक्सपोर्ट किया। इतना बासमती चावल कभी भी एक्सपोर्ट नहीं किया गया था। अगर इससे पहले साल यानी अप्रैल 2022 से मार्च 2023 तक की बात करें तो हमने 45,60,762 मीट्रिक टन बासमती चावल अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेचा था। यानी एक साल में ही 6,81,749 मीट्रिक टन अधिक चावल एक्सपोर्ट किया गया। वो भी तब जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में कदम-कदम पर हमारा विरोध करने के लिए पाकिस्तान खड़ा रहता है। भारत अपनी विश्वसनीयता के बल पर एक्सपोर्ट बढ़ा पा रहा है।

## कितना रहा दाम

- » साल 2023-24 में भारत ने औसतन 1113 यूएस डॉलर प्रति टन पर बासमती चावल को एक्सपोर्ट किया।
- » वर्ष 2022-23 में हमने 1050 डॉलर प्रति टन के औसत भाव पर बासमती का एक्सपोर्ट किया था।
- » हमने 2023-24 के दौरान अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रति टन 63 डॉलर अधिक दाम पर सौदा किया।
- » अलग-अलग देशों में बासमती चावल को हम अलग-अलग रेट पर निर्यात करते हैं।
- » भारत ने सबसे ज्यादा 1966 डॉलर प्रति टन पर उरुग्वे को बासमती चावल बेचा।
- » दाम के मामले में दूसरे नंबर पर स्लोव्हेनिया रहा, जहां से हमने 1752 डॉलर प्रति टन पर सौदा किया।

## कहां हुआ ज्यादा एक्सपोर्ट

इराक में भारतीय बासमती चावल का एक्सपोर्ट सबसे ज्यादा बढ़ा है। साल 2023-24 में भारत ने इराक को 8,24,779 मीट्रिक टन चावल बेचकर 7349.5 करोड़ रुपए कमाए। एक साल 2022-23 में यह सिर्फ 364068 मीट्रिक टन और 3031.9 करोड़ ही था। भारतीय बासमती का सबसे बड़ा आयातक सऊदी अरब है। सऊदी अरब में हमने इस साल 10,98,039 मीट्रिक टन बासमती बेचकर 10391.1 करोड़ रुपए कमाए। अमेरिका में बासमती चावल का एक्सपोर्ट रुपये के लिहाज से 31.56 फीसदी बढ़ गया है।

## डॉ. गोविंद सिंह ने सीएम को लिखा पत्र

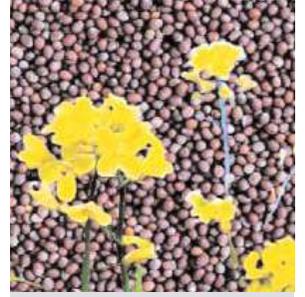
## भिंड में खरीद केंद्रों पर उग्र से लाकर बेची जा रही सरसों

» कलेक्टर की भूमिका पर उठाए सवाल

» कलेक्टर बोले-कहीं कोई गड़बड़ी नहीं

» यूपी में सरसों का भाव 4300 रुपए विंटल

» मध्यप्रदेश में 5650 रुपए प्रति विंटल भाव



## शासन ने कोई कार्रवाई नहीं की

भिंड। पूर्व नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखकर भिंड में उत्तर प्रदेश से सरसों लाकर खरीद केंद्रों पर बेचे जाने का आरोप लगाया है और उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। उन्होंने यूपी की सीमा के पास निजी गोदामों को खरीद केंद्र बनाने और हाल ही में जब्त 250 बोरी सरसों के मामले में कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव की भूमिका पर भी सवाल उठाए हैं। हालांकि, कलेक्टर का कहना है कि कहीं कोई गड़बड़ी नहीं हो रही है, पत्र में उठाए मामलों को लेकर डॉ. गोविंद सिंह ही बेहतर बता सकते हैं। दरअसल, डॉ. गोविंद सिंह ने पत्र में लिखा है कि 12 फरवरी व 29 मार्च 2024 को मुख्य सचिव मप्र को पत्र लिखकर अवगत कराया गया था कि भिंड में ब्लैक

इस पत्र पर शासन ने कोई कार्रवाई नहीं की। अब यूपी से व्यापारियों से खरीदकर शासकीय बारदाने में भरे 250 बोरी सरसों को मंडी से लगभग 700 रुपए प्रति क्विंटल अधिक में समर्थन मूल्य पर मछंड सोसाइटी पर बेचते पकड़ा गया, लेकिन कलेक्टर ने बिना सर्वे नंबर जांच कराए सरसों उस किसान की बता दी गई, जिसके पास गोदाम भी नहीं है।

लिस्टेड सहकारी संस्थाओं और जिन सहकारी संस्थाओं के स्वयं के गोदाम थे, उनको न बनाकर निजी गोदामों को खरीदी केंद्र बनाया गया है। वहां खाद्यान्न माफिया तथा व्यापारी यूपी से सरसों खरीदकर भिंड में आसानी से बेच सकते हैं।

## इसलिए उठ रहे सवाल

यूपी में समर्थन मूल्य पर सरसों का भाव 4300 रुपए प्रति क्विंटल है। वहीं मध्य प्रदेश में समर्थन मूल्य पर सरसों का भाव 5650 रुपए प्रति क्विंटल है। ऐसे में खाद्यान्न माफिया द्वारा यूपी से सरसों लाकर मध्य प्रदेश में चल रहे खरीद केंद्रों पर बेचे जाने की आशंका जताई गई है। खरीद केंद्र प्रबंधन के अनुसार सरसों पर लिखा तो रहता नहीं है कि यह मप्र की है या उत्तरप्रदेश की। सरसों अच्छी है तो उसकी तुलाई कर दी जाती है।

## हरी खाद के लिए सनई या ढेंचा बोयें और प्राकृतिक खेती को दें बढ़ावा

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आरके प्रजापति एवं डॉ. आईडी सिंह द्वारा किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए हरी खाद के लिए सनई या ढेंचा की फसलों की बोवनी करें। हरी खाद के लिए हमारे पूर्वज भी सनई या ढेंचा की फसल बोवनी कर भूमि की उर्वराशक्ति और उत्पादकता को बढ़ाते थे। हमारे यहां कृषि में दलहनी फसलों का महत्व सदैव रहा है। दलहनी एवं गैर दलहनी फसलों को उनके वानस्पतिक वृद्धि के समय जुताई कर पौधों को सड़ने (अपघटन) के लिए मिट्टी में दबाना ही हरी खाद कहलाता है। इससे मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है। ये फसले अपनी जलग्राहियों में उपस्थित सहजीवी जीवाणुओं द्वारा वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन को सोखकर भूमि में एकत्र करती हैं। हरी खाद के लिए प्रयुक्त होने

## हरी खाद के लिए फसलों में निम्न गुणों का होना आवश्यक है -

- » दलहनी फसलों की जड़ों में उपस्थित सहजीवी जीवाणु गंधियां (गांठे) वातावरण में युक्त नाइट्रोजन को यौगिकीकरण द्वारा पौधों को उपलब्ध कराती हो।
- » फसल शीघ्र वृद्धि करने वाली हो। हरी खाद के लिए ऐसी फसल होनी चाहिए जिसमें तना, शाखाएँ और पत्तियों कोमल एवं अधिक हों, ताकि मिट्टी में शीघ्र अपघटन होकर अधिक से अधिक जीवांश तथा नाइट्रोजन मिल सके।
- » चयनित फसलों मूसला जड़ वाली होनी चाहिए ताकि गहराई से पोषक तत्वों का अवशोषण हो सके।

वाली प्रमुख फसले दलहनी फसलों में ढेंचा, सनई, उर्द, मूंग, अरहर, चना, मसूर, मटर, लोबिया, मोठ, खेसारी तथा कुल्थी मुख्य हैं। लेकिन जायद में हरी खाद के रूप में अधिकतर सनई ऊंचा, उर्द एवं मूंग का प्रयोग ही प्रायः अधिक होता है।

## जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

- » जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।
- » समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।
- » ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आवाह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 9425048589

“आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा”